# विश्व पर्यावरण दिवस समारोह

[अनुदान: पर्यावरण विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रदत्त]

[५–६ जून १९८३]



गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,

हरिद्वार।

यह बड़े खेद की बात है कि सभी देशों में उन्नति का अर्थ प्रकृति पर आक्रमण समझा जाने लगा है......... जरूरत इस बात की है कि रहन-सहन का स्तर भी सुधरे और लोगों को जो कुछ विरासत में मिला है उसमें कोई फर्क न आये और न प्रकृति के सौन्दर्य ताजगी और स्वच्छता में, जो हमारे जीवन के लिए बहुत जरूरी है, कोई कमी आए ।

—इन्दिरा गांधी

प्रधानमन्त्री भारत सरकार

# "विश्व-पर्यावरण दिवस"

## ५ जून, १९८३

"पर्यावरण से हमारा तात्पर्य अपने या किसी भी जीव या जीव समूह के बाहर विद्यमान परिवेश समस्त वस्तुओं, पदार्थों एवं कारकों के समुच्चय या सम्मिश्रण से है, जैसे-जल, वायु पृथ्वी, धुआं, ध्वनि, मोटर, रेल, वायुयान, जन्तु-वनास्पति, मनुष्य आदि ।

मनुष्य के द्वारा की गई अनेक क्रियाओं के फलस्वरूप आज पर्यावरण में ऐसे परिवर्तन आ रहे हैं जो समस्त प्रकार के जीवन के लिये हानिकारक हैं । इस प्रकार हमारा पर्यावरण दूषित हो रहा है । इस समस्या की ओर आज पूरे विश्व का ध्यान आकृष्ट हुआ है ।

वर्तमान जगत की यह समस्या जो भयावह रूप से मानव सभ्यता को निगल जाने के लिये अपने पंजे बढ़ा रही है प्रदूषण की समस्या है । प्रत्येक व्यक्ति की पर्यावरण के प्रति सहनशीलता की निश्चित सीमायें हैं और जब कोई कारक इन सीमाओं से अधिक मात्रा में उपस्थित होता है उसे प्रदूषण कहते हैं । इससे निबटने के लिये, वातावरण में इस विष-वमन की प्रतिक्रिया को रोकने के लिये सभी देशों की सरकारें प्रयत्नशील है । इस विष को पीने के लिये भगवान शिव की तरह सबसे अधिक सफल माध्यम वृक्ष पाये गये हैं । इनकी पत्तियां वायु में मिले प्रदूषक पदार्थों के सूक्ष्म कणों को रोक और सोख लेती है । पत्थर के कोयले से उत्पन्न प्रदूषक रोकने के लिये "जंगल जलेबी" नामक वृक्ष

का सघन रोपण बहुत लाभकारी पाया गया है। यह धुंए की सांद्रता में लगभग "२७ प्रतिशत" की कमी और सल्फर डाय-आक्साइड की सांद्रता में "८० प्रतिशत" की कमी करने में समर्थ पाया गया। शक्ति-चालित वाहन जैसे–कारें, ट्रक एवं बसें भी प्रदूषण के स्रोत हैं। यदि सड़कों और मकानों के बीच १० मीटर चौड़ी तथा ६ मीटर ऊंची हरित पट्टिका का विकास किया जाये तो मार्गों से आने वाले कार्बन मोनो आक्साइड की "मात्रा में ४४ प्रतिशत" कमी हो जाती है।

वायु के समान जल भी प्रदूषण से मुक्त नहीं है। कारखानों से निकलने वाले नाना प्रकार के प्रदूषक पदार्थ नदियों में प्रवाहित किये जाते हैं। इसीलिये कानपुर के निकट गंगा और कलकता के निकट हुगली नदी प्रदूषण का शिकार है। इस समय भारत के १३ नगर जल प्रदूषण से ग्रस्त हैं। कारखानों से निकालने वाले अनेक ट्रेस एलीमेंट नदी के जल में प्रवाहित हो जाते हैं जिनमें से कुछ पौधों और जन्तुओं में मेटाबोलिक एरर पैदा कर देते हैं जिससे कई प्रकार के रोग हो जाते हैं जैसे–कैंसर, हृदय रोग, स्नायु रोग एवं पेट के रोग।

प्रदूषण के लिये प्रायः जन-संख्या को उत्तरदायी माना जाता है। बढ़ती हुई जन-संख्या की आवश्यकता की पूर्ति के लिये अधिक औद्योगीकरण किया जाता है जिससे प्रदूषण में वृद्धि होती है। किन्तु आज हम देखते हैं कि अनेक विकसित देशों में जनसंख्या कम होने पर भी प्रदूषण अधिक जनसंख्या वाले देशों की तुलना में अधिक है क्योंकि वहां प्रति व्यक्ति आवश्यकता अधिक है। अतः वास्तविक दोष तृष्णा का है। शायद इसीलिये हमारे वैदिक ऋषियों ने "इदन्नमम" को इतना महत्व दिया है।

---

## वातावरण संरक्षण

प्रदूषण को कम करने के अतिरिक्त पौधों का वातावरण संरक्षण में भी अत्यधिक महत्व है। वृक्षों का बेहिसाब काटा जाना, जंगल के जंगल, साफ कर देना प्रकृति में असन्तुलन पैदा कर देता है। इसके दूरगामी परिणाम होने हैं-भूमि का "अपरदन" प्रारम्भ हो जाता है, भूमि कृषि के "अयोग्य" हो जाती है। ताप-नियन्त्रण एवं 'जलचक्र" नियन्त्रण बिगड़ जाता है, जन्तु जीवन के प्राकृतिक निवास एवं वन संपदा नष्ट हो जाते हैं। प्रत्यक्ष है कि वातावरण संरक्षण और वृक्षों का गहरा सम्बन्ध है। "रक्षया प्रकृति पातु लोकाः।" ब्रह्मोपनिषद का यह वाक्य मनुष्य को सदैव याद रखना पड़ेगा अन्यथा विनाश का वह मार्ग जिस पर वह चल पड़ा है उसे कहीं का नहीं छोड़ेगा।

### वेदों में पर्यावरण संरक्षण :-

असंबाधं बध्यतो मानवानां यस्या उद्धत प्रवतः समं बहु।
नाना वीर्या ओषधीर्या विभर्ति पृथिवी नः प्रथतां राध्तां नः॥

अथर्व० १२/२

### वनस्पतियों से युक्त पृथ्वी ही कल्याण करने वाली है :—

पृथ्वी के ऊंचे भाग, अर्थात् पर्वत समतल भाग और निम्न भाग नाना गुणों वाली औषधियों से परिपूर्ण हों। एसी नाना गुणों से युक्त वनस्पतियों से मण्डित पृथ्वी ही मनुष्य मात्र का कल्याण करने वाली होती है। जब पृथ्वी के उक्त तीनों भाग वनस्पतियों से नंगे हो जाते हैं तो पृथ्वी मनुष्य का कल्याण करने में असमर्थ हो जाती है।

विश्वंभरा वसुधानी प्रतिष्ठाहिरण्यवक्षा जगतो निवेशनो ।
वैश्वानरं बिभ्रति भूमिरग्निमिद्रऋषभाद्रविणे नो दधातु ।।
अथर्व० १२।६

भूमि सम्पूर्ण सम्पदाओं को जननी है ।

यह पृथ्वी समस्त विश्व का भरण पोषण करतो है, यह सभी प्रकार के ऐश्वर्यों को धारण करतो है, इस पृथ्वी को छाती में सभी स्वर्ण आदि धातुयें विद्यमान है, इसी में समस्त प्रकार को अग्नियां भी रहती है। यह धन एवं सभी को बल प्रदान करती है । अर्थात् ऐसी भूमि की हमें रक्षा करनी चाहिये ।

गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोऽरण्यंते पृथिवीस्योनमस्तु ।
बभ्रुं कृष्णां रोहिणी विश्वरूपां ध्रुवां भूमि पृथिवीमिद्रगुप्ताम्
अजीतोऽहतो अक्षतोऽध्यष्ठां पृथिवीमहम् ।। अथर्व० १२/११

पृथ्वी की रक्षा कर, बह तुम्हें दीर्घजीवी बनाएगी ।

हे मानव ! भूरे रंग वाली, काले रंग वाली और लाल रंग वाली पृथ्वी क्रमशः भरण पोषण, कृपि योग्य और अत्यन्त उपजाऊ होती है एवं रमणीय पर्वतमालाओं एवं नाना प्रकार के वनों से परिपूर्ण रहती है। ऐसी भूमि मनुष्य को पूर्ण आयु प्रदान करती है एवं पूर्ण स्वस्थ रखती है।

यस्यां वृक्षा वानस्पत्या ध्रुवास्तिष्ठन्ति विश्वहा ।
पृथिवी विश्वधायसं धृतामच्छा वदामसि ।।
अथर्व० १२/२७

## नाना प्रकार के वृक्ष और वनस्पतियों से मण्डित पृथ्वी

जिस भूमि पर सदा बहुत बड़े वन और जंगल तथा नाना प्रकार की वनस्पतियां स्थिर रूप में रहते है, जिसके पेड़ों को कभी भी नहीं काटा जाता है, वह पृथ्वी सभी की पालना एवं रक्षा करती है, हम उसको नमस्कार करते है।

यते भूमे विखनामि क्षिप्रेतदपि रोह तु ।
मा ते मर्म विमृर्वरि मा ते हृदयमर्पिपम् ॥

अथर्व० १२/३५

## बिना प्रयोजन के भूमि को न खोदें।

हे भूमि हम जिस तेरे भाग को खोदें, वह शीघ्र ही हरा-भरा हो जाये अर्थात् पौधों को इस तरह न काटें कि वह फिर से न उग सकें। लोहा, कोयला आदि पदार्थों के निमित्त हमें भूमि को खोदना पड़ता है परन्तु उसे सावधानी से खोदें। पृथ्वी अन्वेषण करने योग्य है परन्तु भूमि की रोहण शक्ति को हम नष्ट न करें। उसे व्यर्थ में न खोदें (अन्यथा इससे भूमि अपरदन होगा)।

शिलाभूमिरश्मा पांसुः सा भूमिः संधृता धृता ।
तस्यै हिरण्यवक्षसे पृथिव्या अकरे नमः ॥

अथर्व० १२/२६

## पृथ्वी के विभिन्न रूप

वह पृथ्वी शिला, पत्थर, धूल, मिट्टी आदि रूपों वाली है। इस भूमि के वक्ष स्थल में सोना, चांदी, लोहा, तांबा, हीरे, जवाहरात एवं खनिज लवण आदि विद्यमान है। ये खनिज लवण पौधों की वृद्धि के लिये आवश्यक होते है। यह भूमि सबको धारण करने वाली है। हमें इसका सत्कार करना चाहिये।

## पुराणों में पर्यावरण

१. अग्नि पुराणः यदि कोई व्तक्ति अपने वंश, धन और सुख में वृद्धि की इच्छा रखता है तो वह फल फूल वाले किसी वृक्ष को न काटें। जो व्यक्ति दस कुएं खुदवाता है, उसे एक तालाब खुदवाने का पुण्य मिलता है। जो दस तालाब खुदवाता है उसे एक झील खुदवाने का पुण्य मिलता है; १० झीलें बनाने वाला व्यक्ति एक देश भक्त उत्पन्न करने का पुण्य प्राप्त करता है। किन्तु १० देशभक्त उत्पन्न करने का पुण्य एक वृक्ष लगाने के पुण्य की अपेक्षा छोटा है।

२. मतस्य पुराणः एक वृक्ष का आरोपण १०पुत्रों के बराबर है।

३. बराह पुराणः 'पंचाभ्रवापी नरकं न याति' अर्थात् आम के पांच पौंधे लगाने वाला व्यक्ति कभी नरक नहीं जाता है।

४. विष्णु धर्म सूत्र–एक मनुष्य द्वारा पालित पोषित वृक्ष का महत्व एक पुत्र के समान है। देवगण इसके पुष्पों से, यात्री इसकी छाया में बैठकर, मनुष्य इसके फल-फूल खाकर इसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

५. पद्म पुराणः जो मनुष्य सड़क के किनारे छायादार वृक्ष लगाता है वो स्वर्ग में उतने ही समय तक सुख भोगता है जितने समय तक वह वृक्ष फलता-फूलता रहता है।

## क्या आप यह जानते हैं ?

I भारत का कुल थल क्षेत्र ३२८ मिलीयन हेक्टेयर है। इसका प्रायः आधा क्षेत्र अर्थात् १५० मिलीयन हेक्टेयर, जल एवं वायु अपरदन लवणता, क्षारता जल प्लावन आदि के कारण अपकर्ष की विभिन्न स्थितियों में है।

अतः कोई आश्चर्य नहीं कि देश की आधी से अधिक जनसंख्या गरीबी की रेखा से नीचे है।

II १३० मिलीयन टन खाद्यान पैदा करने में भूमि से लगभग १८ मिलीयन टन खनिज लवण (पोषक तत्व) लिये जाते हैं।

उर्वरक और जैव स्रोतों द्वारा भूमि को १०.३ मिलीयन टन खनिज लवण (पोषक तत्व) दिये जाते है।

इस प्रकार भूमि बैंक को ६-७ मिलियन टन खनिज लवण का घाटा रहता है। क्या इस प्रकार ओवर ड्राफ्ट से कोई भी बैंक दिवालिया नहीं हो जाएगा? साथ ही हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि 'अपरदन द्वारा भूमि प्रतिवर्ष ८.४ मिलियन टन पोषक तत्व खो रही है।

III भारत की ४० मिलीयन हेक्टेयर भूमि बाढ़ से पीड़ित है। गंगा क्षेत्र में प्रति वर्ष ८ मिलियन हेक्टेअर भूमि में बाढ़ आती है जिससे २५० करोड़ रुपये की वार्षिक हानि होती है।

क. १६५२ से पूर्व बाढ़ ग्रस्त क्षेत्र २५ मिलियन हेक्टेअर था जो आज बढ़कर ४० मिलीयन हेक्टेअर हो गया।

ख १६५२ से देश में जिन बांधों का निर्माण हुआ है उनके लिए ४ लाख हेक्टेअर भूमि से वनों को समाप्त करना पड़ा।

क्या 'क' और 'ख' में कोई संबन्ध है ?

बाढ़ ग्रस्त क्षेत्र की वृद्धि के निम्नलिखित मुख्य कारण है।

१– जंगलों का बेहिसाब कटान २– भूमि पर उगी वनस्पतियों का विनाश

२– भूमि संरक्षण की कमी।

समस्या का समाधान—

१- वृक्षारोपण ।

२- भूमि की जल शोषण क्षमता में वृद्धि करना ।

३- भूमि पर वनस्पतियों का घना आवरण बनाये रखना ।

३- सीमित चारण (चरायी)

एक अनुमान के अनुसार एक औसत आकार के वृक्ष (भार पचास टन) से ५० वर्ष में हमको निम्नलिखित लाभ प्राप्त होता है:—

| | |
|---|---|
| आक्सीजन का उत्पादन १००० किलो | राशि रु० में— |
| १. प्रतिवर्ष के हिसाब से ५० वर्षों में | २,५०,०००/- |
| २. वायु प्रदूषण पर नियंत्रण | ५,००,०००/- |
| ३. भू-क्षरण की रोकथाम, भूमि की उर्वरा–शक्ति बढ़ाना | २,५०,०००/- |
| ४. जल का पुनर्चक्रीकरण व पर आद्रता नियंत्रण | ३,००,०००/- |
| ५. पशु, पक्षियों का आवास | २,५०,०००/- |
| ६. प्रोटीन एवं वसा निर्माण | २०,०००/- |
| | १५,७०,०००/- |

**डा० विजय शङ्कर**
आयोजन सचिव, विश्व पर्यावरण दिवस
अध्यक्ष
वनस्पति विज्ञान विभाग
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्याल, हरिद्वार

To G-B.K. Hooja
c/o Dr. C. Seyal
37, Field Rise Littleover
Derby (Derbyshire)
U.K.



मुद्रक–शक्ति प्रेस, (नहर पुल) कनखल, फोन : ७७

